विद्या भवन ,बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

वर्ग- सप्तम्

विषय- हिंदी

सुप्रभात बच्चों ,

आज की कक्षा में आपके पाठ्य पुस्तक के पाठ 19 को सामग्री के रूप में दिया जा रहा है ।

जिसका शीर्षक है – जमानत ।

।।जमानत ।।

- ***नाटक***
- ***-- सरताज बानो***

जमानत

पात्र परिचय	:	शेर-मैसूर टीपू सुल्तान, महामंत्री, दूत तथा टीपू के पुत्र
समय	:	मैसूर के तृतीय युद्ध के बाद का
स्थान	:	टीपू का प्रासाद

(परदा उठता है। सुसज्जित **कक्ष** में टीपू सिंहासन पर चिंतामग्न बैठा हुआ है। एक सेवक का प्रवेश। महामंत्री के आगमन की सूचना देकर वापस जाता है। महामंत्री का प्रवेश)

महामंत्री : (झुककर टीपू को अभिवादन करते हैं।) हुजूर! बंगाल के गवर्नर का दूत हाजिर होना चाहता है।

टीपू सुल्तान : क्या आप अनुमान कर सकते हैं कि वह क्या संदेश लाया होगा?

महामंत्री : कोई अच्छी बात निश्चित ही नहीं होगी, पर हुजूर! मैं पहली बार आपको इतना निराश देख रहा हूँ।

टीपू : हम निराश नहीं हैं, चिंतित हैं। क्या हमारी चिंता उपयुक्त नहीं है?

महामंत्री : उपयुक्त है हुजूर।

टीपू : दूत को ससम्मान हाजिर करें। जो कुछ सामने आएगा उसका हम हिम्मत के साथ सामना करेंगे।

(महामंत्री ताली बजाते हैं। सेवक आता है, उसे दूत को ले आने की आज्ञा देते हैं। सेवक जाता है, दूत को साथ लेकर आता है)

दूत : (अभिवादन करता है) मैसूर के प्रतापी सुल्तान को प्रणाम! मैं आपके लिए जनरल कार्नवालिस का संदेश लाया हूँ।

(महामंत्री की ओर पत्र बढ़ाता है)

महामंत्री : (पत्र पर दृष्टि डालते ही अत्यंत विचलित हो जाते हैं। फिर सँभलकर टीपू की ओर देखते हुए) आज्ञा है?

टीपू : (सँभलकर बैठते हुए) सुनाइए..... क्या लिखते हैं जनरल।

महामंत्री : (पढ़ते हैं) मैसूर के सुल्तान टीपू को विदित हो कि युद्ध में हमारी विजय और आपकी पराजय के बाद अपनी सशक्त स्थिति को देखते हुए हम आपके सम्मुख संधि की तीन शर्तें रख रहे हैं।

टीपू : (चौंककर) क्या?